अंजना गर्ग

ई-मेल:anjanamdurohtak@gmail.com

समय का दान

"मीना, इतवार को तो तेरी छुट्टी होती है, फिर कहाँ से आ रही है। पिछले रविवार भी मैंने देखा था—सुबह-सुबह भाग रही थी ।" सरोज ने अपनी पड़ोसन से पूछा ।

"बस कुछ खास नहीं । मैं हर इतवार को महिला वृद्धाश्रम जाती हूँ ।" मीना ने कहा ।

"क्या तेरा कोई रिश्तेदार है वहाँ?" सरोज ने जिज्ञासा से पूछा।

"भगवान न करे कोई रिश्तेदार वहाँ जाए।" मीना ने आसमान की तरफ हाथ जोड़ते हुए ठंडी-सी आवाज में कहा।

"फिर रिश्तेदार नहीं तो रोज-रोज क्यों जाती है?" सरोज ने फिर प्रश्न दागा।

"अब तो समझो रिश्तेदार ही है।"

"क्या मतलब?" सरोज ने माथे पर बल-से डालते हुए पूछा।

"मेरी मैडम अक्सर महिला वृद्धाश्रम जाती हैं, उनके साथ मैं भी। उन महिलाओं को कुछ खाने का या पहनने-ओढ़ने का सामान देकर आती है। इसी साल जनवरी में हम जब वृद्धाश्रम उन महिलाओं को गरम शॉल बांटने गए तो सभी महिलाओं ने ले ली। परंतु एक संभ्रांत-सी वृद्ध महिला ने शाल लेने से इनकार किया और मुदिता मैडम की बाँह पकड़कर कमरे की तरफ ले जाते हुए कहने लगी, “आप प्लीज, मेरे साथ आएँ एक बार, सिर्फ पाँच मिनट के लिए।”

एक अजीब-सी कशिश थी उसके कहने और ले जाने में। हम दोनों ही उसके साथ चल दीं। कमरे में जाकर उसने अपने बेड के नीचे से एक बड़ा-सा ट्रंक निकालकर खोला तो हमने देखा उसमें ढेरों गरम बहुत सुंदर नई शॉल रखी थीं। उसका नाम गायत्री है। वह कहने लगी—मेरे पास कपड़ों की कोई कमी नहीं । अगर बेटा, दे सकती है तो कभी-कभी थोड़ा समय मुझे दे दिया कर।

मुदिता मैडम एकदम बोली , "क्या मतलब समय से?”

गायत्री ने कहा, "मेरे से कभी-कभी बात कर लिया कर। आ सको तो, तुम्हारा बहुत एहसान बेटा, नहीं तो फोन पर ही बात कर लिया कर । मुझे भी लगे मेरा कोई है। मुझसे मिलने आने वाला, बात करने वाला।"

वो कहकर चुप हो गई और एक आस के साथ मैडम को देखने लगी। मैं अपने आँसुओं को बड़ी मुश्किल से रोक पाई। मैं जो हमेशा यह सोच-सोच कर दुखी होती थी कि भगवान ने मेरे को तो इतना पैसा नहीं दिया कि कुछ दान कर सकूं। गायत्री देवी की इस बात ने एक पल में मुझे राहत दे दी। मीना, जो लगातार सरोज को बता रही थी, उसे सरोज ने बीच में ही टोका , "वह कैसे?”

“अब मैं हर इतवार सुबह 9:30 से 12:30 बजे तक अपना समय महिला वृद्ध आश्रम में बिताती हूँ । उन महिलाओं के साथ, खासकर गायत्री देवी के साथ ।"

मीना की आवाज में एक अजीब-सी खुशी और सुकून था।

अंजना गर्ग

माँ का विश्वास

लगातार मोबाइल की आवाज आ रही थी। वीणा भागकर देखती, शायद इस बार उसका ही हो। पर हर बार निराशा ही हाथ लगती । ढेरों शुभकामनाएँ, कलरफुल फोटोग्राफ्स, खूबसूरत केकस, पता नहीं क्या-क्या उसके चाहने वाले भेज रहे थे । पर उसके लिए सब फीका था। सब कहते थे—मैडम साठ साल की उम्र में भी आप कितनी एक्टिव हैं फेसबुक, व्हाट्सएप और ट्विटर पर । कमाल हैं आप । पर किसी को वीणा क्या बताये कि इन सब के माध्यम से जिसे मैं ढूंढ रही हूँ, वह तो मिला ही नहीं । उसी के कारण तो सीखा यह सब । वही कहा करता था—मेरी मॉम आम मम्मीयों जैसी नहीं । मेरी मॉम तो स्मार्ट मॉम है । एक दिन दस साल पहले छोटी-सी बात पर नाराज होकर ऐसा गया कि आज तक पलटकर नहीं देखा कि उसकी स्मार्ट मॉम कैसी है। उसके पापा तो चले गए। पर मॉम कैसे जा सकती है बिना उससे मिले। तब तक तो भगवान को भी इंतजार करना पड़ेगा। मोबाइल पर लाइट टिमटिमा रही है । वो नहीं देख रही ।

मेड सर्वेंट, "बीबीजी फोन ।"

"चलो दे दो। "

सुंदर केक और गुब्बारों के साथ... "मॉम सॉरी, हैप्पी बर्थडे, मैं आ रहा हूँ।"

वीणा ने अपनी आँखें पूरी खोल लीं, फिर पढ़ा, फिर पढ़ा, फिर पढ़ा। मेड सर्वेंट भी पास बैठी है । रात के दो बज चुके हैं । वीणा उसी को देखे जा रही हैं । एकटक । कभी पढ़ती है तो कभी देखती है। देखती ही जाती है ।आखिर माँ के विश्वास की जीत हुई है।